ISSN No. 2349-4654
नाद - नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 1, अंक : 1, नवम्बर 2014

राग संरक्षण में आगरा घराने का योगदान

डॉ. नीलम पॉल
एसोसिऐट प्रोफेसर,
संगीत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़।

सार-संक्षेप

आगरा घराने का प्रारम्भ नायक गोपाल के शिष्यों में से श्री अलख दास से माना जाता है। इनके शिष्य हाजी सुजान खां इस घराने के संस्थापक माने जाते हैं। अब तक इस घराने के गुरुजनों, कलाकारों, वागेयकारों व कलावन्तों ने राग संरक्षण हेतु अनेक प्रयास किए। रागों का संरक्षण विभिन्न समय अंतरालों में किसी न किसी रूप में होता ही आया है। इस संदर्भ में गुरु-शिष्य परम्परा सबसे सशक्त माध्यम रहा है। घरानेदार गुरुओं ने अपने परिवार या शिष्यों को बन्दिशें सिखाकर रागों की बन्दिशों का संरक्षण किया है। यह कार्य बन्दिशों के स्वरलिपि के माध्यम से भी हुआ है। जिसका उदाहरण भातखण्डे द्वारा रचित क्रमिक पुस्तक मल्लिका के रूप में हमारे सामने है। वैज्ञानिक युग में इन बन्दिशों को संरक्षित रखने के कई साधन विद्यमान हैं। इन आधुनिक तकनीकों से इन्हें लम्बे समय तक संरक्षित रखा जा सकेगा। प्रस्तुत शोध-पत्र में आगरा घराने के रचनाकारों द्वारा संरिक्षत किए गए रागों की चर्चा की गई है तथा कुछ बन्दिशों की स्वरलिपि भी की गई है। उनका संरक्षण इस घराने में किस प्रकार हुआ है इसकी चर्चा विस्तार से की गई है।

शोध-पत्र

रंजयते इति रागः यानि जो मन का रंजन करे, वही राग है। सम्पूर्ण भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधाार भी राग ही है। राग यानि जिसके अन्तर्गत स्वर, लय और पद (गायन के संदर्भ में) का प्रस्तुतिकरण एक विशेष रीति, शैली व परम्परा के अनुसार किया जाए, जिसमें तत्सम्बन्धी नियमों व स्वर लगावों, स्वर समूहों आदि द्वारा प्रस्तुतिकरण हो, उसे राग या राग संगीत कहा जाना चाहिए। राग संगीत की परम्परा आज की नहीं, अपितु प्राचीन समय से परवर्तित व परिलक्षित होती आ रही है। रागों के संरक्षण हेतु भिन्न-भिन्न परम्पराओं, बानियों, एवं घरानों का अमूल्य योगदान रहा है।[1] जहाँ नौहार, खंडहार, डागुर व गोबरहार बानियों द्वारा ध्रुवपद व धमार शैली की परम्परा का निर्वाह हुआ वहीं ख्याल शैली में आगरा, ग्वालियार, दिल्ली, पटियाला, जयपुर आदि-आदि घरानों की मुख्य भूमिका रही है। 'विशिष्ट स्वर-समूहों से सुसज्जित एवं निर्मित एक विशिष्ट व्यक्तित्व, विशिष्ट व्यवस्था का पालन करते हुए गाये-बजाये जाने वाले 'रागों' का संरक्षण एवं संवर्धन अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि यह प्रयोग पर आधारित अभिव्यक्ति है। क्रियात्मक रूप ही इसका मुख्य आधार है। क्रिया के दौरान ही यह प्रत्यक्ष रूप धारण करता है, अतः इनका संरक्षण अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

'राग-संरक्षण' हेतु आधुनिक समय में विभिन्न प्रकार के प्रयास किये गये। इस प्रकार के पुनीत कार्यों में यूं तो प्रत्येक घराने का योगदान रहा है, किन्तु 'आगरा-घराना', जिसकी एक सुदृढ़ परम्परा रही है, का इस क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान रहा है। आगरा घराने का प्रारम्भ नायक गोपाल के शिष्यों में से श्री अलख दास से माना जाता है।[2] इनके शिष्य हाजी सुजान खां से लेकर आधुनिक समय तक की 'शिष्य परम्परा' 'राग' के संरक्षण हेतु सतत रूप में प्रयासरत रही है। अब तक इस घराने के गुरुजनों, कलाकारों, वागेयकारों व कलावन्तों ने राग संरक्षण हेतु अनेक प्रयास किए। संगीत के क्षेत्र को एक समृद्ध शिष्य परम्परा, कलाकार व रचनाकार देते हुए रागों के संरक्षण हेतु अनेक बन्दिशों का निर्माण किया। इन बन्दिशों में कलाकारों ने अपने उपनाम का उपयोग किया। इनमें उस्ताद महबूब खां साहिब (दरस पिया), उस्ताद विलायत हुसैन खां साहिब (प्रान पिया), उस्ताद फैयाज़ खां साहिब (विनोद पिया), उस्ताद लताफत हुसैन खां साहिब (प्रेम दास), उस्ताद यूनुस हुसैन खां साहिब (दरपन), उस्ताद अकील अहमद खां साहिब (मोहन पिया) एवं पण्डित यशपॉल (सगुन पिया)[3] आदि के नाम उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने अपनी अपूर्व रचनात्मक क्षमता, सृजनशीलता के द्वारा प्रचलित व अप्रचलित अनेक रागों में अनेकों ऐसी बंदिशें संगीत के क्षेत्र को समर्पित की जिन्हें आज भी बड़ी श्रद्धा के साथ सीखा व सुना जाता है क्योंकि रचनाकारों ने इन बंदिशों में 'राग-रूप' इतना स्पष्ट एवं सटीक व खूबसूरत ढंग से संजोया है कि जब भी इन बंदिशों को गाया जाता है तो प्रतीत होता है मानों 'राग' का सम्पूर्ण व्यक्तित्व शुद्धता के साथ हमारे समक्ष प्रत्यक्ष रूप धारण कर प्रस्तुत हो गया हो। अन्य घरानों के गायकों, कलाकारों व गुरुजनों द्वारा भी आगरा घराने की बंदिशों को अपनाया गया है। उदाहरण के रूप में उस्ताद फैयाज खां साहब द्वारा रचित राग जोग की 'द्रुत-ख्याल' की बंदिश जिसके बोल है, 'साजन मोरे घर आए', राग 'नट-बिहाग' की 'द्रुत ख्याल' की बंदिश जिसके बोल हैं—'झन-झन-झन-झन पायन बाजे', राग बिलासखानी तोड़ी में 'द्रुत ख्याल' की बंदिश 'बालम मोरी छांड दे रे कलईयां आदि ऐसी अनेकों बंदिशें आज सीखी-सिखाई जा रही हैं।

राग विलासखानी तोड़ी—

चीज़

स्थायी : वालम मोरी छाँड़ो कलैयाँ। करकन लागी मोरी चुरीयाँ।।

अन्तरा : प्रेम पिया तोसे विनती करत हूँ। जाओ सौतनीया के सौंग वलैयाँ।।

स्वरांकन

×				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								–	–	–	रे	रे	सानि	सा	रे
								ऽ	ऽ	ऽ	वा	ल	मऽ	मो	री
ग	–	रे	ग	रे	सा	रे	ग	रे	–	सा,	सा	रे	नि	–	ध
छाँ	ऽ	ऽ	ऽ	डो	ऽ	क	ऽ	लै	ऽ	यां,	क	र	क	ऽ	न
ग	–	रे	ग	रे	सा	रे	ग	रे	रे	सा,	रे				
ला	ऽ	ऽ	ऽ	गी	ऽ	मो	री	चु	री	या,	बा				

अन्तरा

												–	ध	ध	नि
												ऽ	प्रे	म	पि
सां	–	सां	सां	नि	नि	सां	सां	रें	नि	ध	–	–	गं	गं	गं
या	ऽ	तो	से	बि	न	ती	क	र	त	हुं	ऽ	ऽ	जा	ओ	सो
रें	नि	ध	मम	रे	–	रे	ग	रे	–	सा,	रे				
त	नी	या	केऽ	सौं	ऽ	ग	ब	लै	ऽ	या,	बा				

राग जोग

स्थायी : साजन मोरे घर आये, अति मनसुख पाये।।

अन्तरा : मंगल गावो चैक पुरावो, प्रेम पिया हम पाये।।

स्वरांकन

ताल त्रिताल मध्यलय

×				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								–	म	ग़	सा	सा	नि़	ग़	सा
								ऽ	सा	ज	न	मो	रे	घ	र
सा	–	नि़	–	नि़	प	नि़	प								
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये								
								–	ग	ग	म	म	ग	म	प
								ऽ	अ	ति	म	न	ऽ	सु	ख
म	–	ग़	सा	ग़	–	सा	–								
पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ								

अन्तरा

								म	म	प	नि	–	सां	–	सां
								ऽ	मं	ग	ल	ऽ	गा	ऽ	वो
सां	नि	प	म	ग	–	म	–	ग	–	ग	म	ग	ग	म	प
चै	ऽ	क	पु	रा	ऽ	वो	ऽ	प्रे	ऽ	म	पि	या	ऽ	ह	म
म	–	ग	म	ग	सा	ग	सा								
पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये								

राग नटबिहाग

स्थायी : झन् झन् झन् झन् पायल वाजे जागे मोरी सास ननदीया, और दोरनीयाँ हाँ रे जेठनीया मा।।

अंतरा : अगर सुने मेरो बगर सुनेगो जो सुन पावे सदा रंगीले, जागे मोरी सास ननदीया और दोरनीयाँ हाँ रे जेठनीयाँ मा।।

ताल-त्रिताल मध्यताल

स्थायी

×				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								–	–	–	म	नि	ध	प	–
								ऽ	ऽ	ऽ	झन	झन्	झन्	झन्	ऽ
प	–	ग	म	ग	–	ग	म	ग	–	सा,	म	ग	नि़	–	सा
पा	ऽ	य	ल	बा	ऽ	ऽ	ऽ	जे	ऽ	ऽ	जा	गे	मो	ऽ	री
नि़	–	नि़	सा	नि़	ध़	प़	–	–	प़	नि़	सा	रे	रे	सा	–
सां	ऽ	स	न	न	दी	या	ऽ	ऽ	औ	र	दो	र	नी	याँ	ऽ
गम	प	ग	म	ग	रे	सा	–	म	ग	रेग	म				
हाँ ऽ	ऽ	रे	जे	ठ	नी	या	ऽ	ऽ	मा,	ऽ	झन्				

अन्तरा

								–प	प	नि	नि	सां	–	सां	सां
								ऽअ	ग	र	सु	ने	ऽ	मे	री
सां	सां	रेंसां	सां	नि	–	ध	–	प	–	म	–	ग	–	रे	–
ब	ग	र	सु	ने	–	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा,	प	–	पप	सारेंगं	–	सां	रेंनि	धप	म	पग	रेसा, म	ग	नि़	–	सा
गो,	जो	ऽ	सुन	पाऽवे	ऽ,	स	दाऽ	ऽ	रं	गीऽ	लेऽ, जा	गे	मो	ऽ	री
नि़	–	नि़	सा	नि़	ध़	प़	–	ऽ	प़	नि़	सा	रे	रे	सा	–
सा	ऽ	स	न	न	दी	या	ऽ	ऽ	औ	र	दो	र	नी	याँ	ऽ
गम	पप	ग	म	ग	रे	सा	–	म	ग,	रेग	म				
हाऽ	ऽ	रे	जे	ठ	नी	याँ	ऽ	ऽ	मा,	ऽ	झन				

विद्वजनों का ऐसा मानना है कि यदि किसी राग की बन्दिश सीख ली जाए तो समझो राग आपके पास आ गया। यानि बन्दिश में राग का स्वरूप, प्रकृति व सौन्दर्य निहित होता है। राग के सम्पूर्ण विस्तार हेतु बंदिश मार्गदर्शक का कार्य करती है। आगरा घराने की बन्दिशों का लोहा सभी घरानों के संगीतज्ञ मानते हैं। इस घराने की शुद्धता, सादगी, व खास मिजाज़ की बन्दिशों का संग्रह कर उन्हें रिकार्डिंग रूप में संरक्षित करने का सराहनीय कार्य 'संगीत रिसर्च अकादमी, कलकत्ता' द्वारा किया जाना राग संगीत के क्षेत्र में आग्रणीय कार्य है। आगरा घराने के अनेकों गायक कलाकारों की बंदिशों का स्वयं उनकी या उनके शिष्यों की आवाजों में संग्रह कर उन्हें रिकार्डिंग रूप में संरक्षित किया जाना आज के समय की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है जो आने वाले समय में एक वरदान सिद्ध हो सकती है। इसी प्रकार प. विष्णु नारायण भातखण्डे जी ने भी 'राग-संरक्षण' हेतु एक ऐसा अनूठा प्रयास किया जिससे चिरकाल तक के लिए लिखित रूप में राग व उनकी स्वरलिपिबद्ध बंदिशे संगीत के समाज के लिए उपलब्ध हो सकेंगी। पण्डित भातखण्डे द्वारा आगरा घराने के प्रचलित एवं अप्रचलित राग व बन्दिशों का संग्रह व संरक्षण लिखित रूप में किया गया जो आज की पीढ़ी के लिए वरदान सिद्ध हुआ हैं। इसी कड़ी में पंडित आर. सी. मेहता जी का नाम जोड़ना आवश्यक हो जाता है। आपने 'आगरा घराने' की बंदिशों को स्वरलिपि बद्ध करके अपनी पुस्तक 'आगरा-घराना परम्परा एवं गायकी' के अन्तर्गत छपवाकर भविष्य के लिए संरक्षित कर दिया जिसकी आज बहुत आवश्यकता है।

अंत में ऐसा कहा जा सकता है कि राग संरक्षण हेतु आगरा घराने द्वारा किए गए भिन्न-भिन्न प्रयास बहुमूल्य हैं। घराने की रागदारी की शुद्धता, सादगी और खास मिजाज की बंदिशें गायकों और कलावन्तों की क्षमता के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। साथ ही राग संग्रहण एवं राग संरक्षण हेतु घराने के भिन्न-भिन्न कलाकारों द्वारा बंदिशों को लिखित व रिकार्डिंग रूप में उपलब्ध कराना उन रागों को अमरत्व प्रदान करने से कम नहीं है। आगामी पीढ़ी अवश्यमेव इन उपलब्धियों का लाभ उठा सकेगी।

पाद-टिप्पणियाँ

1. चौबे, 1984, पृ. 11
2. मैत्रा, 2002, पृ. 2
3. मैत्रा, 2002, पृ. 15
4. मेहता, 1969, पृ. 69
5. मेहता, 1969, पृ. 43
6. मेहता

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

चौबे, सुशील कुमार। संगीत के घरानों की चर्चा। वाराणसी : श्री महेश्वरी प्रेस, 1984

भातखण्डे, विष्णु नारायण, पं. क्रमिक पुस्तिका मालिका भाग 1-6 हाथरस : संगीत कार्यालय, 1974

मेहता, रमण लाला। आगरा घराना-परम्परा, गायकी और चीज़ें। बड़ौदा: भारतीय संगीत, नृत्य-नाट्य महाविद्यालय, 1969

मैत्रा, जयति। उस्ताद विलायत हुसैन खां—व्यक्तित्व एवं कृतित्व। नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स, 2002